September 2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue 274

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य का योगदान

अतिथी संपादक :
प्राचार्य डॉ. भाऊसाहेब गमे
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला

विशेषांक संपादक :
डॉ. रघुनाथ वाकळे
प्रा. कैलास बच्छाव

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

September-2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue 274

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य का योगदान

अतिथी संपादक :
प्राचार्य डॉ. भाऊसाहेब गमे
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

विशेषांक संपादक :
डॉ. रघुनाथ वाकळे
प्रा. कैलास बच्छाव
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

अनुक्रमणिका

अ.नं.	शीर्षक	लेखक /लेखिका	पृ. क्र.
	हिंदी विभाग		
1	स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान	डॉ. नितीन पंडीत	05
2	काव्य विधा में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान	डॉ. वाल्मिक सूर्यवंशी	08
3	काव्य विधा में स्वतंत्रता आंदोलन	डॉ. भारती धोंगडे	11
4	आत्मकथाविधास्वतंत्रता आंदोलन के दौरान:एकअध्ययन	अनू पाण्डेय	14
5	काव्य विधा में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान (माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में)	डॉ. मालती शिंदे	16
6	दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति	डॉ. पूनम बोरसे	19
7	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान	डॉ. मंगला भवर	24
8	मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान (वीरांगना झलकारी बाई के विशेष संदर्भ में)	प्रा. अशोक उघडे	28
9	छायावादी काव्य का स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान	प्रा. हर्षल बच्छाव	32
10	दिनकर के काव्य में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान	डॉ. राजेंद्र बाविस्कर	37
11	पत्रकारिता का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान	डॉ. रघुनाथ वाकळे	43
12	भारतीय स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान	प्रा. कैलास बच्छाव	47
13	स्वतंत्रता आन्दोलन में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य का योगदान	प्रा.रवींद्र ठाकरे, प्रोफ. डॉ. अनिता नेरे	50
14	मैथिलीशरण गुप्तजी और भारत का स्वतंत्रता आंदोलन	डॉ. संदीप देवरे	56
15	राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिंदी कविता	श्री. निलेश पाटील	59
16	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उपन्यास विधा का योगदान : पंकज सुब्वीर का उपन्यास 'ये वह सहर तो नहीं' में १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम	सविता मुंढे, डॉ. शशिकला साळुंखे	66
17	हिंदी कवियों काम्स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान	डॉ. विष्णु राठोड	69
18	हिंदी काव्य विधा का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान	डॉ. मुखत्यार शेख, श्री जयवंतराव पाटील	73
	मराठी विभाग		
19	७२ वे अ.भा.मा.संमेलन अध्यक्ष कविवर्य वसंत बापट यांच्या काव्यातील राष्ट्रीय जाणीवा	डॉ. शंकर बोऱ्हाडे, निलेश आहेर	78
20	स्वातंत्र्य आंदोलनातील माने गुरुजींच्या कवितांचे योगदान	डॉ. आनंदा सोनवणे	83
21	मराठी चरित्र - आत्मचरित्र वाङ्मयाचे भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील योगदान	प्रा. नाना घुगे	89
	English Section		
22	Kanthapura : A Piece of the Freedom Movement	Dr. Subhash Randhir	93
23	Folk Elements in Ghashiram Kotwal	Mr. Kushaba Salunke & Dr. Abdul Anees Abdul Rasheed	95
25	The Special Relationship between Hamlet and his Dead Dad	Prof. T. B. Bidgar	100
26	Heaven of Freedom : Tagore's Conception of Ideal Freedom	Dr. Manisha Gaikwad	104
27	Historical and Postmodern Perspectives of Partition through Chaman Nahal's 'Azadi'	Dr. Kamalakar Gaikwad	109

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue - 274: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य का योगदान
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
September- 2021

काव्य विधा में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान

डॉ. वाल्मिक दशरथ सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
के. बी.एच.कॉलेज निमगाव
फोन नं.- ९४२१६०४६२४
ई-मेल – valmiksuryawanshi123@gmail.com

जहाँ नहीं पहुचा रवि वहा पहुचा कवि ऐसा कवि को कहा जाता है ।कवि भी समाज काही एक प्राणी है। यह असंभव है कि वह अपने युग की विचारधाराओं से मुक्त रह सके ।कवि समाज का सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी होता है । अत: उसके लिए सामाजिक परिस्थितयों की उपेक्षा करना असंभव है।काव्य केवल कल्पना नही अंगार भी है।काव्य तो जीवन के लिए आनंदायिनी, रोगनाशिनी ,रविकिरण जिसकी रोशनी पडते ही अंधकार में प्रकाश और प्रकाश में स्वच्छता आ जाती है।

राष्ट्रीय आंदोलन के घटनाक्रम एक अन्य दिलचस्प पहलू है कि इसमें सामान्य जनता के उभार की शक्ल उभरी है।भारत के इतिहास में पहली बार हुआ कि उसे असंख्य -असंख्य लोगों ने बिल्कुल नये ढंग से अपने दुनिया को देखना शुरू किया। यहाँ दो चित्रों पर ध्यान दिजिए ,पहली का संबंध विचार से है ,लोगों ने मस्तीक का इस्तेमाल करते हुए विचारों के स्तर पर परंपरा, धर्म नैतिकता, सदाचार, सामाजिक जवाबदारी, जाती विभाजन के नकारात्मक पक्ष आदि विषयों का बीजारोपण हुआ। दूसरी चीज यह थी की सामान्य लोगों ने अपने मामूली जिंदगी को ,और आपने गली -मोहल्ले कस्बों, गांवों की सच्चाई को अपने दृष्टिकोन से देखना-परखना शुरू किया ।

राष्ट्रीय आंदोलन का जनजागरण तथा जागृती कवि विधा द्वारा की गई। कवि द्वारा विविध लोकगीतों के माध्यम से आझादी का शंखनाद हुआ ।काव्य द्वारा देशाभिमान के प्रति जागृकता निर्माण की गई। उसी समय बांगला के बंकिमचंद्र चटर्जी और रवींद्रनाथ टैगोर का स्मरण होताहै। बंकिमचंद्र जी की रचनाओं ने राष्ट्रीय 'आनंदमठ में वंदेमातरम् 'की रचना की। वंदे मातरम गीत ने हमारे सभी देशवासियों को एक सूत्र मेंपिरो कर उसमें ऐसा रोमांस खडा किया था कि अंग्रेज सरकार इस शब्द मात्र से ही कांपने लगी थी ,जहाँ पर भी वंदे मातरम की गुज सुनाई दी जातीथी ,वही अंग्रेज सरकार अनुमान लगा लेती थी ।यहा पर क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की पाठ्यपुस्तक का कार्य किया ।

स्वतंत्रता आंदोलन के इस महायज्ञ में कवियों ने तत्कालिन समाज मे चेतना के ऐसे बीज बोये,जिनके अंकुरों की सुवास से सुवासित वृक्षों ने उस झंझावात को जन्म दिया ,जिसने समाज के हर वर्ग को इस आंदोलन में लाकर खडा किया। गोपालदास व्यास के शब्दों में-"आजादी के चरणों में जो जयमाला चढाई जाएगी ।"वह सुनो ,तुम्हारे शीशों के फुलों से गुंथी जाएगी। "व्याज जी ने अपने उन महान क्रांतिकारियों को जिन्होंनेदेश के लिए, अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, ऐसे भावपूर्ण शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर मानों समस्त राष्ट्र की ओर से ही उनकी स्मृतियों पर अपने पुष्प अर्पित कर दीये है ।माइकेल मधुसूदन ने बंगाली में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी में नर्मद ने गुजराती में चिपलूनकर ने मराठी में भारतीने तमिल में तथा अन्य अनेक कवियों नेविभिन्न भाषाओंमें राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया। ऐसा काव्य लेखन एवं गीतलेखन किया गया था , जिसे पढकर या गाकर तथा सुनकर हमारे देश की तत्कालीन युवा पीढी के रक्त में क्रांति का उबाल आ जाता था ।उनकी बाजुए फडफडने लगती थी,और मन राष्ट्र वेदी पर बलि देकर देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना से ओतप्रोत हो उठता था ।

माखनलाल चतुर्वेदी ,रामनरेश त्रिपाठी ,वालकृष्ण शर्मा 'नवीन ',और सुभद्राकुमारी चव्हाण ने राष्ट्रप्रेम कोही मुखरित नही किया अपितु स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया। माखनलाल चतुर्वेदी ने फुल के माध्यम मे अपने देशभक्ती की भावना को व्यक्त किया-

" चहा नहीं मैं सुरवाला के गहनों में गूंथा जाऊ ,
चहा नहीं मैं प्रेमी माला में विंध प्यारी को ललचाऊ,
मुझे तोड लेना ए वनमाली उस पथ पर देना फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढाने जीस पथ जाए वीर अनेक।"

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीयता का प्रचार-प्रमार कर भारत के रणवांकुरों को स्वतंत्रता आन्दोलन में कुंदने के लिए प्रेरित किया।उन्होंने वहुत सरल शब्द में देश के लोगों की चेतना को झकझोर कर रख दिया था। कवि नीरज की उक्त पंक्तियों सेही उनका स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान स्पष्ट झलकता है।लोगों को अत्याचार के आगे न झुकने की प्रेरणा देते हुए नीरज ने कहा था -"देखना है जुल्म की रफ्तार वढती है कहाँ तक। देखना है वम की बौछार है कहा तक ।"

15 अगस्त 1947को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन में हर्ष और उल्हास का दिन तो है ही ,इसके साथ ही स्वतंत्रता की खातिर अपने प्राण न्यौछावर करनेवाले शहीदों का पुण्य दिवस भी है ।देश की स्वतंत्रा लिए 18 47 तक क्रांतिकारियों व आंदोलनकारियों के साथ ही लेखकों कवियों और पत्रकारों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका भूमिका निभाई । राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत- भारती में देश प्रेम की भावना को सर्वातोपरी मानते हुए आहवान किया

" जिसको निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नही ,नर- पशु निरा है ,और मृतक समान है ।।"

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की ,झाशी की राणी कविता को कोई भूल सकता है ,जिसने अंग्रेजों मकी चूलें हिलाकर रख दी।वीर सैनिकों में देश प्रेम का अंगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक हे -

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
वूढे भारत में भीआई, फिरसे नई जवानी थी।।"
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लडी मर्दानी वह तो झाशीवाली राणी थी।।

श्यामलाल गुप्त जी की लेखनी के साथ तो हर तरफ यही आवाज गुंज उठी-" विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा उंचा रहे हमारा ।।" पराधीनता लढाई लढलेवाले वीर मैनिक ही नही वफादार प्राणी भी जान गए ।तभी तो पंडित शामलाल नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोडे 'चेतक के लिए 'हल्दी घाटी, में लिखा -

"रणवीच चौकडी भर-भर कर, चेतक वन गया निराला था,
राणा प्रताप के घोडे से,पड गया हवा का पाला था ,
गिरता ता न कभी चेतक तन पर,राणा प्रताप कि घोडा था
वह दौड रहा अरि मस्तक पर ,या आसमान पर घोडा था।।"

आज देश की जो आज देश की जो परिस्थितियां वनी हुई है,उनमें भी सर्वत्र एक आवाहन है, एक चुनौती है, चॅलेंज है।हमारे लिये सर्वत्र पुकार है ,ललकार है,एक आवाहनहै- क्रांति का और उठ खडे होकर देश देशद्रोही ,देश विरोधियों और राष्ट्रघातियों को वढाने काम मां भारती आज भी बंधनों में जकडी खडी है ।कही ईसाइयत इसको जकड रही है ,तो कही इस्लाम अपना विकराल रूप दिखा रहे है। देशद्रोहियों को राजनीति के

गद्दार लोगअपना समर्थन देकर यह स्पष्ट कर रहे हैं कि देश मे आज भी जयचंद की परंपरा वनी हुई है। ऐसे मे फिर हमें किसी दिनकर की, किसी मैथिलीशरण गुप्त की ,किसी प्रेमचंद की आवश्यकता है। फिर हमने उनकी लेखनी मे निकलनेवाले गरम लहू से बनने वाले सुभाष चंद्र बोस की आवश्यकना है ,भगत सिंह की आवश्यकता है, चंद्रशेखर और विस्मिल की आवश्यकता है। यज्ञ वेदी फिर वही है,क्रांति की धूम के लिए। समझ लो की स्वतंत्रता आन्दोलन को तैयार करने की सारी भूमिका वन चुकी है।अग्नी प्रचंड करने भर की देर है।शत्रू फिर फन फैला रहे है। यदि हम शांत रहे गये या इस विकराल स्थिति के विरुद्ध वृद्ध उठ खडे होने का साहस खो बैठे तो वडे संघर्ष के पश्चात जिस आजादी को प्राप्त किया था ,वह हमसे फिर गुम हो सकती है ।आज के हमारे कलियोंका और साहित्यकारोका यह महती दायित्व वनता है कि वह इस देश के वारे में सोचें औरउसी परंपरा को जीवित रखे जो मैथिलीशरण गुप्त की परंपरा है,प्रेमचंद की परंपरा है,नीरज की परंपरा है,और यह स्मरण रखे कि यहां पर राम का चरित्र लिखने के लिए वाल्मिकी तव मिलता है जव राम इस योग्य होता है।वही उसके वारे में लेखनी चला सके। अभिप्राय यह है कि या पर चाटुकारिता को अपना उद्देश नही माना जाता और दरवारी कभी होना यहां पर अभिशाप है।यहाँ दरवार कभी ढूंढता है ,कवि दरवार को नहीं ढूंढते।यहां कवि किसी मोह के वशीभूत होकर नहीं लिखते। यहां तो राष्ट्र जागरण के लिए लिखा जाता है, राष्ट्र उत्थान के लिए लिखा जाता है लिखा जाता है ,राष्ट्र-उध्दार के लिए लिखा जाता है।क्योंकि सव कवि अपना यह दायित्व समझते हैं कि राष्ट्र जागरण और राष्ट्रोत्थान ही उनकी लेखनी का एक मात्र व्रत हे ,एक मात्र संकल्प है। जय हिंद!

संदर्भ सूची

1. समकालीन साहित्य और समीक्षा- डॉ.बच्चनपृष्ठ- 09
2. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भाग १- एस. ताराचंद, २०१७
3. आधुनिक भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन भाग - ३,परीक्षा मंथन.
4. हिंदी साहित्य का इतिहास-राजनाथ शर्मा पृष्ठ-125